गद्य काव्य :-

साहित्य शास्त्रियों ने काव्य को दो भागों में विभक्त किया है - (1) दृश्यकाव्य (2) श्रव्यकाव्य। 'दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम्' (सा० द० 6-1) श्रव्य काव्य को भी पुनः तीन भागों में विभक्त किया गया है - पद्य, गद्य और चम्पू। 'गद्यं पद्यं च मिश्रं च तत् त्रिधैव व्यवस्थितम्' (काव्यादर्श 1-11)

गद्य शब्द 'गद व्यक्तायां वाचि' धातु से 'यत्' प्रत्यय करने पर बनता है। जिस रचना में लय प्रधान पद्य बन्ध प्रयोग किये बिना भाव, भाषा एवं रस का समुचित परिपाक हो, उसे गद्य कहते हैं। पद्य का सम्बन्ध 'भावना' से है तो गद्य का 'विचार' से। रामायण में वाल्मीकि की करुण भावना श्लोक रूप में प्रकट हुई, परन्तु व्यक्ति द्वारा सोचने का कार्य गद्य में ही किया जाता है। जहाँ छन्द विधान नहीं होता अर्थात् अक्षरों का अवसान सम्बन्धी कोई नियम नहीं होता, उसे गद्य कहते हैं - 'अपादः पदसंतानो गद्यम्' (काव्यादर्श 1-23)

गद्य का सर्वप्रथम दर्शन वेदों में होता है। कृष्ण यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में गद्य का प्राचीनतम रूप प्राप्त होता है। उसके बाद ब्राह्मण ग्रन्थ तो प्रायः गद्यात्मक ही हैं क्योंकि ये यज्ञों का विस्तृत वर्णन करते हैं। आरण्यक ग्रन्थों में भी

गद्य की प्रचुरता है। उपनिषदों में भी गद्य का पर्याप्त प्रयोग किया गया है। इस प्रकार समस्त वैदिक साहित्य में पद्य के साथ-साथ गद्य का भी प्रयोग मिलता है। वेदाङ्ग भी गद्य में लिखे गये हैं। ये सूत्र शैली में हैं। वैदिक गद्य अत्यन्त सरल, सुबोध व समासरहित था। ह, वै, उ आदि अव्यय वाक्य में रोचकता तथा सौन्दर्य उत्पन्न करते थे।

परन्तु लौकिक साहित्य में गद्य का प्रयोग अपेक्षाकृत बहुत कम हो गया क्योंकि यहाँ पर गद्य को कवियों की कसौटी माना जाने लगा — 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'। समास बहुला व ओजमयी भाषा शैली को ही गद्य का प्राण कहा जाने लगा — 'ओजस्समासभूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्'

यद्यपि समास बहुला और ओजपूर्ण भाषा शैली को गद्य की आत्मा मानने वाले सर्वप्रथम आचार्य दण्डी थे परन्तु संस्कृत गद्य की यह विशिष्टता काफी प्राचीन समय से चली आ रही है। पतञ्जलि (150ई०) ने अपने महाभाष्य में वासवदत्ता, सुमनोत्तरा, और भैमरथी नामक तीन गद्य रचनाओं का उल्लेख किया है — 'आख्यायिकाभ्यो बहुलं लुग् वक्तव्यः। वासवदत्ता, सुमनोत्तरा। न च भवति, भैमरथी (महाभाष्य प.3.87) पतञ्जलि का महाभाष्य भी गद्य में है।

वैदिक काल से प्रारम्भ कर मध्यकाल तक गद्य साहित्य के दो रूप प्राप्त होते हैं — वैदिक तथा लौकिक। लौकिक गद्य भी तीन प्रकार का माना गया है — पौराणिक,

शास्त्रीय तथा साहित्यिक। महाभारत, भागवत तथा कुछ पुराण पौराणिक गद्य में रचित हैं। यह गद्य वैदिक और लौकिक दोनों ही गद्य की विशेषताओं से युक्त है यही वैदिक और लौकिक गद्य को एक साथ मिलाने का कार्य करता है। इति।।